एकलव्य एवं रूपान्तर का प्रकाशन

डोंगा चलिस

एकठन पुतरी कथा

वी. सुतेयेव

डोंगा चलिस

मूल रचना

वी. सुतेयेव

अनुवाद

छन्नुराम मार्कन्डे

एकलव्य एवं रूपान्तर

का प्रकाशन

डोंगा चलिस

एकठन पुतरी कथा

मूल रचना : वी. सुतेयेव

अनुवाद : छन्नुराम मार्कन्डे

अनुवाद सहयोग : चिन्ताराम साहू, इलीना सेन

स्टोरीज एण्ड पिक्चर्स की एक पुतरी कथा।
प्रगति प्रकाशन, मास्को के सौजन्य से अंग्रेजी
पर से अनुदित एवं प्रकाशित।

ये किताब मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत शासन अउ सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित।

यह किताब हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, उड़िया, तेलुगु, बांग्ला, बुन्देली, मालवी और मराठी में भी उपलब्ध है।
कुल प्रतियाँ 30000.

दिसम्बर, 2000 / 1000 प्रतियाँ
मूल्य रु. 10.00

प्रकाशक

एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी,
भोपाल – 462 016, म. प्र.

एवं

रूपान्तर, ए -26 सूर्या अपार्टमेंट्स
कटोरा तालाब, रायपुर–492 001

भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित।

THE BOAT

A picture story

Text and illustrations - V. SUTEYEV

Translation - Chhannuram Markande

Translation Assistance - Chintaram Sahu, Ilina Sen

From STORIES AND PICTURES
Progressive Publishers, MOSCOW

Published with the financial assistance from
Ministry of Human Resource Development,
Government of India and Sir Ratan Tata Trust.

December, 2000 / 1000 copies
Price : Rs.10.00
This book is also published in these languages - Hindi Gujarati, Bangla, Telugu, Oriya, Bundeli, Malvi, Marathi and English. Total copies 30000

Published by:

EKLAVYA
E-1/25, Arera Colony
Bhopal - 462 016 (M.P.)
AND
RUPANTAR
A - 26, Surya Apartments, Katora Talab,
RAIPUR-492 001

Printed at Bhandari Offset Printers, Bhopal.

डोंगा चलिस

एक ठन मेंचका, एक ठन चींया, एक ठन मूसवा, एक ठन चांटी अउ एक ठन कीरा, सबो झन घुमे बर गीन।

रेंगत-रेंगत सबो एक ठन बड़े तरिया के तीर मा अमरीन।

''चलो तंउरबो'', कहिके मेंचका हा पानी मा कूद गीस।

"हमन ला तो तंउरे बर नई आय" कहिके चींया, मूसवा, चांटी अउ गोबर कीरा ह किहिन।

"टर्र टर्र टर्र, फेर इहाँ तुंमर मन के कोनों बुता नई हे", कहिके मेंचका ह हांसिस। ये बात ल कहिके वोहा हाँसत-हाँसत जावत रिहिस, अउ वो ह अतका हाँसीस कि ओकर साँस घलो अटके ल लागीस।

ये ला देखके चीयां, मुसवा, चांटी अउ गोबर कीरा मन ला अब्बड़ खराब लागीस। अउ सबों झन एकर उपाय सोचे ल लागीन।

सबो झन ह सोच समझ के एक ठन उपाय निकालीन।

चींया गीस अउ झट ले
एक ठन पत्ता ल धरके
अईस।

मूसवा ह एक ठन
रखीया के खोलटी
ल लानिस।

चाँटी ह एक ठन संडेवा काड़ी धरीस।

अउ गोबर कीरा ह करिया सुत
के बड़े जान कुटका लानीस।

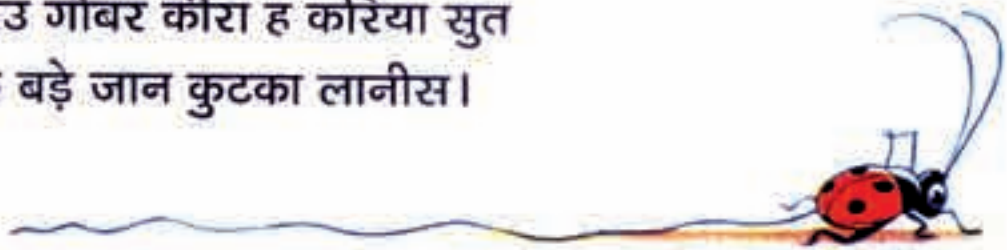

तहाँ ले सबो झन बुता करे बर लगगे - संडेवा काड़ीला रखीया के खोलटी के तरी मा फँसा दीन, पत्ता ला सुत ले बाँध दीन, तहाँले झट किन एक ठन बने असन डोंगा बन गीस।

सबो झन मिलके वो डोंगा ल पानी मा ढकेल के ओकर
उपर चढ़ गीन। तहांले डोंगा ह पानी म बोहाय बर लागीस।

थोड़ किन बाद
मेंचका हा अपन
मुढ़ ला पानी ले
बाहिर निकालीस।
अउ ओ हा फेर
हँसईया रिहिस
फेर डोंगा हा
ओकर ले बड़
दुरिहा चल दे
रिहिसे।

अतका दुरिहा चल दे रिहिसे कि
मेंचका हा ओला नई अमरा सकीस।
ओ हा देखत रहिगे।